nbt.india
एकः सूते सकलम्

Rs. 10/-

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 11, November 2014

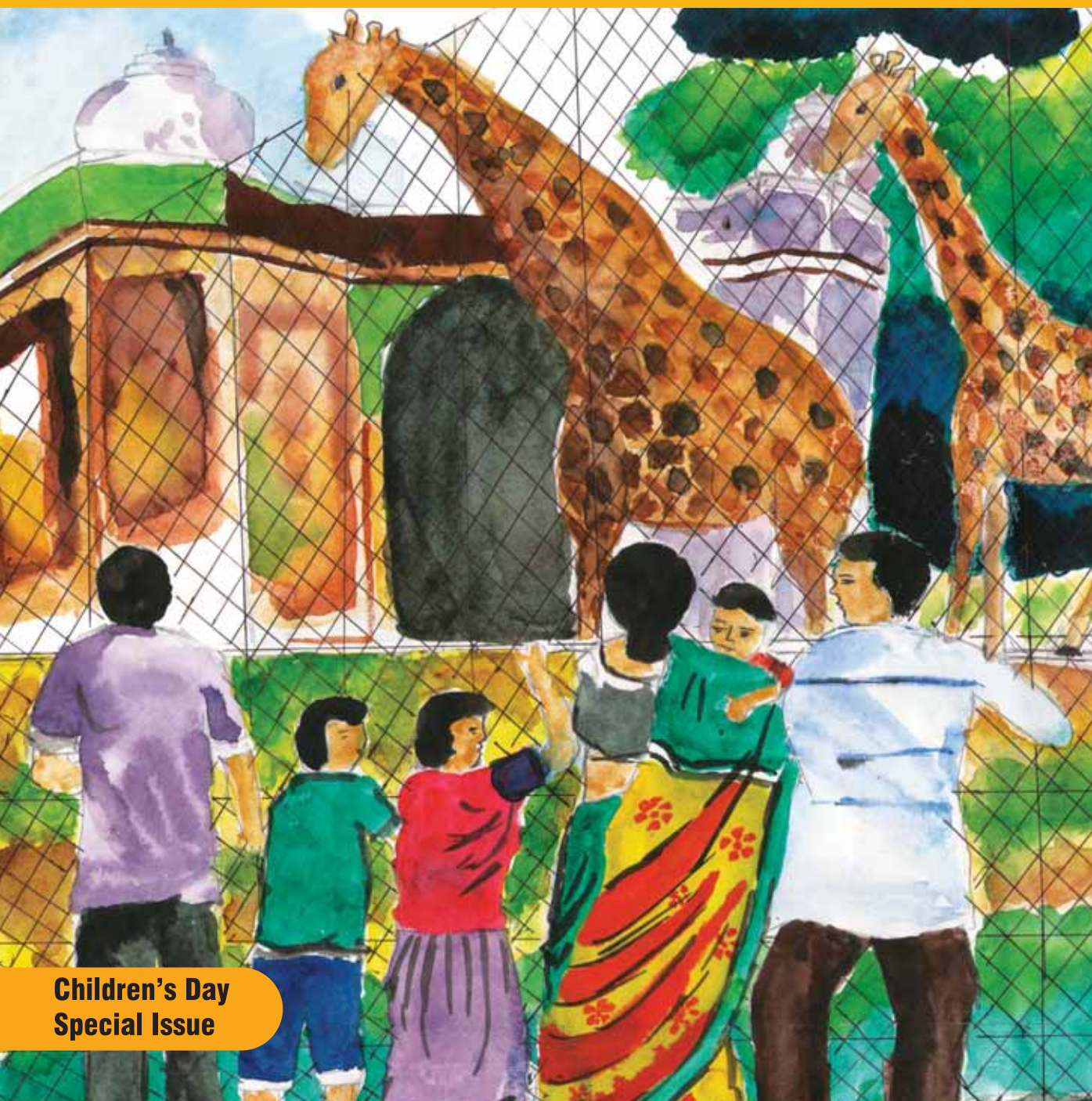

Children's Day Special Issue

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 11, November 2014 **वर्ष 19, अंक 11, नवंबर 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Children from Delhi & Jharkhand
दिल्ली और झारखंड के बच्चे

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Sheds, Ph-I, Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

Promoting Books and Reading...		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
The Relationship...	Jawaharlal Nehru	6
नन्ही बुलबुल	समृद्ध कुमार शर्मा	8
The Dream	Pakhi Saini	10
My Trip to Palampur	Chaitanya Srivastava	11
पतंग की ऊँचाई	कमल रश्मि	12
The Story of Malti	Shatakshee Kar	13
शालू को मिली जादू...	अजय कुमार	14
नकल का चक्कर	स्पर्धा कुमारी	15
The Noodle Company	Rashi Dewan	16
बरगद की डालियाँ ही...	सुकुमार दत्ता	17
चित्रकार की चतुराई	अभिनास दास	18
Quarrel of the Colours	Adhiraj Mahajan	19
Iron Man Sardar...	Surekha Panandiker	20
पिंकी और उल्लू दादा	क्षमा शर्मा	23
हाथी दादा की लॉटरी	डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'	26
Learn to Love	Dr. Mani Ram Jena	28
मन की शांति	इरम कमाल	31

***Editorial Address*/संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

Promoting Books and Reading: NCCL Activities

National Centre for Children's Literature (NCCL) of National Book Trust, India organized an interactive session for school children at the premises of the Trust on 8 September 2014. In this session, Dr Tomoko Kikuchi, noted author and translator of the NBT title in Hindi *Hiroshima Ka Dard* interacted with the children.

Through the character of the story *Hiroshima Ka Dard*, Michan, a seven year old girl, Dr Tomoko Kikuchi made children aware about the harmful effects of the radiation caused by atom bomb. Dr M A Sikandar, Director, NBT while welcoming the guests spoke about the importance of International Literacy Day and how books make our life beautiful.

NCCL organized three interactive sessions with children featuring Mr Christopher Cheng, noted Australian Children's author and co-chair of the International Advisory Board for the Society of Children's Book Writers and Illustrators (SCBWI) at Oak Grove School, Mussorie, Rashtriya Indian Military College, Dehradun and Ahlcon International School, Mayur Vihar, Delhi on 25, 26 and 27 September 2014 respectively. In these sessions, Mr Cheng read out from recently brought out NBT book *Water* in English,

whereas the children and teachers read out from the Hindi and Tamil renderings.

NCCL partnered with Uttarakhand Bal Kalyan Sahitya Sansthan for the 2-day International Children's Literature Convention held at Khatima Fibers Factory, Khatima, Uttarakhand from 18 to 19 October 2014. Dr Rajnikant Shukla and Shri Anurag Sharma, eminent authors and critics were deputed by NBT for participation in the event.

NCCL, SCERT and FCICI Foundation, Chhattisgarh together organized Festivals of Reading at Ambikapur, Kabirdham and Mahasamund during the period, 15-22 September 2014 with Exhibition of NBT books through NBT's mobile vans. Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NCCL) coordinated these presentations.

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 20

सात समुंदर

दद्दा, दंगा क्या है?

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

गायत्री अपने दद्दा नारायणन की प्रेरणा से फिर से ट्रेनिंग पर जाने लगी। गायत्री की एकलव्य-साधना से नारायणन परम उत्साहित थे। उनके उत्साह का आलम यह था कि सपने में भी गायत्री को तैरते देखते और उसे डूबते हुए भी देखते। तब वे चिल्ला पड़ते और नींद से जाग जाते। अब आगे का घटनाक्रम...

लाउडस्पीकर में गाने बज रहे थे। रहमत खुदा के बताये गए रास्ते पर चलने के लिए बंदों का आह्वान। मलयालम के गीत में उर्दू के भी ढेर सारे शब्द थे। ठीक जैसे उत्तर भारत के गाँव-गाँव, शहर-शहर में लोग अजमेर शरीफ में चादर चढ़ाने के लिए रिक्शे में लाउडस्पीकर लगाकर चंदा इकट्ठा करते हैं। अजमेर में सम्राट अकबर के गुरु ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के मकबरे पर उनके देहावसान-दिवस पर उर्स का मेला लगता है। आज हबीबशाह की दरगाह भी सजी हुई थी। मेले की भीड़। लोग आ-जा रहे थे। फूल और तरह-तरह की मिठाइयों की दुकानें। कोई चादर चढ़ाने जा रहा था तो कोई माथा टेककर बाहर निकल रहा था।

कुंजपातुम्मा भी हासनकुट्टि का हाथ पकड़कर चढ़ावे की चादर और फूल लेने उधर ही जा रही थी।

आज ही सुबह नारायणन और गायत्री के साथ ये दोनों भी तिरुवनंतपुरम पहुँचे हैं। गायत्री को लेकर नारायणन रवि वर्मा स्टेडियम की ओर चले गए। ये दोनों एक ऑटो में सवार होकर उर्स मेले में मन्नत माँगने यहाँ आ पहुँचे।

तिरु-अनंत-पुरम अर्थात पवित्र अनंत नाग का नगर। आजादी के बाद 1949 ई. में त्रावणकोर (त्रिवांकुर) और कोचीन को मिलाकर एक नए राज्य का निर्माण किया गया। फिर सन् 1956 में मद्रास से मालाबार को लेकर इन दोनों से जोड़ दिया गया। इस तरह बना केरल, नारियल का देश।

त्रावणकोर राजाओं के गृह देवता हैं भगवान श्री पद्मनाभस्वामी। पद्मतीर्थ सरोवर के निकट यह है श्री विष्णु का मंदिर। कहते हैं पांडव अपने वनवास के दौरान जब यहाँ आए तो केरल में पाँच स्थानों पर विष्णु के मंदिर बनाए थे। इस मंदिर के कुलाशेखर मंडपम में अट्ठाईस बड़े और असंख्य छोटे-छोटे स्तंभ हैं। उन पर चोट करने पर मृदंग की ध्वनि सुनाई पड़ती है। कहा जाता है आज से पाँच हजार साल पहले इस मंदिर के निर्माण में चार हजार राजमिस्त्री, छह हजार मजदूर, सौ हाथी और कुल छह महीने का श्रम लगा था।

यहाँ हबीबशाह की दरगाह में हिंदू-मुसलमान दोनों संप्रदाय के लोग अपना श्रद्धा-निवेदन करने पहुँचते हैं। सैयद हबीबुल्लाह के बारे में भी एक कहानी प्रचलित है कि ये यहाँ के एक राजा के गुरु थे। इनकी शिष्य मंडली में सभी संप्रदाय के लोग थे। सभी इनके मुख से ईश्वर की वाणी सुनने के लिए इनके पास आते थे। वे अच्छे गायक भी थे। संगीत ही उनका मंत्र था। किसी सुलतान ने उस राजा के राज्य पर आक्रमण कर दिया। राजा जब युद्धभूमि में गए हुए थे तो रानी और अपनी एकमात्र संतान को इनके आश्रय में छोड़ गए थे। रणभूमि में उन्होंने प्राण त्याग दिया। वह सुलतान राजकुमार को जान से मारने के लिए ढूँढ़ते-ढूँढ़ते यहाँ तक आ धमका। अपनी तलवार दिखाकर उसने हबीबशाह से पूछा, ''उस काफिर की औलाद कहाँ है?''

इस पर उन्होंने उसे डाँटकर कहा, ''काफिर तो तू है जो अल्लाह की इस पवित्र मस्जिद को नापाक करने के लिए तलवार लेकर यहाँ आ पहुँचा है!''

अंत तक उन्होंने उन लोगों का पता नहीं बताया। तलवार चली और इसी जगह उनके प्राण-पखेरू उड़ गए।

तभी से आज भी लगता है हबीबशाह के उर्स का मेला। विश्वास की मर्यादा कैसे रखी जाती है उसकी अनोखी मिसाल।

कुंजपातुम्मा चादर चढ़ा चुकी थी। दोनों ने सिजदा किया। हासनकुट्टि ने अपनी टोपी सीधी की। अल्लाह से दुआ माँगकर दोनों धीरे-धीरे वापस निकले। दरगाह के आँगन में नीम के पेड़ के पास आकर दोनों सुस्ताने लगे।

सिमरन ठाकुर

कुंजपातुम्मा ने उसकी डाल में पीले रंग का एक धागा बाँधा और मन-ही-मन कहने लगी– 'हबीब मेरे हुजूर, तू सबका सच्चा दोस्त है, सबका रखवाला है। इसकी बीमारी भी ठीक कर दे।' उसकी आँखों में आँसू आ गए, ''हे परवरदिगार, इसकी बोली वापस कर दे!''

दरगाह से बाहर निकलकर वे कोई बीस कदम चले होंगे कि थोड़ी दूर पर एक मजमा लगा हुआ था। तरह-तरह की बातें हो रही थीं। लोग उत्तेजित थे। काली पोशाक पहनकर कुछ लोग पर्चे बाँट रहे थे। किसी ने बताया इसमें इन लोगों का फतवा यानी आदेश छपा है कि हर मुस्लिम महिला को बुरका पहनना लाजिमी है। अभी कुछेक दिन पहले कश्मीर के कुछ आतंकवादी संगठनों ने ऐसा फतवा जारी किया था। अब केरल में भी ऐसी बातें सामने आने लगी हैं। यहाँ मुस्लिम महिलाएँ सिर पर केवल चादर ओढ़ लेती थीं। उसे 'थट्टोम' कहते हैं। कुंजपातुम्मा सकपका गई।

कोई कह रहा था, ''अरे, बड़े जालिम लोग हैं। इनकी बातें न सुनो तो वह हाल होगा कि सोचते ही रूह काँप जाती है।''

हासनकुट्टि से चला नहीं जा रहा था। कुंजपातुम्मा उसके लिए दो इडली ले आई। इन्हें निगलने में उसे कोई तकलीफ नहीं होगी।

उधर, बातें जारी थीं।

''अजी, हाल ही में श्रीनगर में कॉलेज की दो लड़कियों के चेहरे पर उन लोगों ने तेजाब फेंका था। या अल्लाह! उनका कसूर सिर्फ इतना था कि उन्होंने अपना मुँह नहीं ढका था।''

''हम गरीबों पर ही ये जुल्म क्यों? जब पाकिस्तान के जनरल आए थे तो उनकी बीवी ने कौन-सा बुरका पहन रखा था?''

हासनकुट्टि को याद आने लगा, कुछ साल पहले कुछ ऐसी-वैसी बातों को लेकर तनाव पैदा हो गया था। मारपीट की छिटपुट घटनाएँ होने लगीं। दंगे की नौबत आ गई थी। 'अल्लाह रहम करे, फिर कुछ न हो जाए, वरना हम तो भूखों मरेंगे, फिर सेंकाई के लिए कोच्चि भी कैसे जाएँगे? कम्बख्त यह रोग न तो जान ले रहा है और न तो चैन ही दे रहा है। कब्र में जाने से तो कम-से-कम चैन की नींद सो सकेंगे!'

वे दोनों वहीं एक मुसाफिरखाने में बैठे रहे। शाम तक स्टेशन पहुँचना है। सुबह ही मास्टर साहब ने कह दिया था कि किस जगह मिलना है। एक ही ट्रेन से सभी वापस चलेंगे।

देखते-ही-देखते आज राजधानी तिरुवनंतपुरम में आयोजित अंतर्विद्यालय तैराकी प्रतियोगिता का दिन आ गया था। कुमारन भी काफी दिनों से इसी पर आँख गड़ाए बैठा था। गायत्री की ट्रेनिंग में उसने जी-जान लगा दी थी। गायत्री तैरकर उठती तो स्विमिंग पूल के किनारे लेटाकर स्वयं अपने हाथों से उसकी पिंडलियों की मालिश भी कर देता। गायत्री को लेकर उसकी उम्मीद तो जैसे नील आकाश में पंख फैलाए बेहिचक उड़ने वाला पंछी बन गई थी।

गायत्री की प्रतिभा, उसकी एकाग्रता एवं लगन आज रंग लाई। नारायणन की तपस्या सफल हुई। आज अंतर्विद्यालय प्रतियोगिता में सौ और दो सौ मीटर की तैराकी में गायत्री को दो पदक मिले हैं। इनमें उसका स्थान प्रथम रहा। उसकी डाइविंग पर किसी को कोई खास उम्मीद न थी। फिर भी उसमें भी उसने द्वितीय स्थान पा लिया है। ऐसी प्रतियोगिताओं में स्वर्ण, रजत या कांस्य पदक नहीं मिलते, केवल स्टील का कप और पदक पुरस्कार में दिया जाता है। गायत्री की तमन्ना है कि वह तैराकी में स्वर्ण पदक प्राप्त करे। परंतु इसके लिए उसे अंतर्राज्यीय प्रतियोगिता में भाग लेना होगा। उसे तो दक्षिण भारत का ओलंपिक कहा जाता है।

कुमारन भी बल्लियों उछलने लगा है। अर्जुन की सफलता को देख-देखकर जैसे गुरु द्रोण फूले नहीं समाते थे, उसी तरह वह भी आज गद्‌गद है, आह्लादित है। गायत्री की पीठ थपथपाते हुए उसने कहा, ''देखा? अब कैसा लग रहा है? तुमने तो पहले ही हथियार डाल दिया था। पगली कहीं की...!''

गायत्री आँखें झुकाकर मंद-मंद मुस्का रही थी।

''जाओ, जाकर अपने अप्पुपन का आशीर्वाद ले लो। और सर से कहना, आज शाम को खूब मिठाई खाएँगे। पझवंगदि के गणपति मंदिर के

सामने बहुत बढ़िया मिठाई की दूकान है। वहाँ से चलेंगे, पद्मतीर्थम सरोवर के पास बैठकर खाएँगे, क्यों? अब बस इंटरस्टेट कम्पिटीशन की तैयारी करनी है। फिर तो दिल्ली दूर नहीं...''

शाम को जब दादा और पोती रेलवे स्टेशन पहुँचे तो वहाँ कुंजपातुम्मा और हासनकुट्टि बैठे हुए थे। फाटक के पास सीढ़ियों पर बैठे वे दोनों मिल गए।

''कहो हासनकुट्टि, हबीबशाह के दरबार में चादर चढ़ा आए?'' नारायणन उन्हें खुश रखना चाहते थे। उन्हें तो सब मालूम था कि उसे क्या हुआ है और आगे होना क्या है।

''देखें, परवरदिगार हमारी मन्नत कबूल करते हैं कि नहीं।'' कुंजपातुम्मा सिर पर चादर सरकाते हुए बोली।

''आ-ज-तो-वहाँ भी बवाल मचा रखा था!''

हासनकुट्टि रुक-रुककर सुबह की वारदात बताने की कोशिश करने लगा।

नारायणन को दुख हुआ। देखो, मजहब के नाम पर जुल्म इन गरीबों को ही सहना पड़ता है। बांग्लादेश या पाकिस्तान की महिला प्रधानमंत्री कौन-सा परदा करती हैं? और उधर अफगानिस्तान में लड़कियों का स्कूल जाना भी बंद। वाह!

बहुत सारी बातें कहकर हासनकुट्टि अपनी छाती को मल रहा था, ''कहीं बात बिगड़ गई तो पहले की तरह दंगा न हो जाए। हम तो फिर कहीं के नहीं रहेंगे।''

''अरे नहीं, ऐसी भी क्या बात है?'' ऊपर से तो उन्होंने कह दिया, पर मन-ही-मन सोचने

शोभा कुमारी दास

लगे, 'हाय देवा! ये हिंदू और मुसलमान मानो एक ही पैंट की दो जेबें हैं, जो हमेशा साथ-साथ रहती तो हैं, पर क्या कभी भी एक-दूसरे से मिल नहीं सकतीं?''

भोली-भाली बच्ची सारी बातें सुन रही थी। उसने आँखें बड़ी करके अपने अप्पुपन से पूछा, ''दद्दा, दंगा क्या होता है?''

सी-26/36-40ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

सूचना : प्रिय पाठक, *सात समुंदर* का यह बीसवाँ भाग है। अगले महीने, यानी दिसंबर अंक में हम इस धारावाहिक उपन्यास को समाप्त कर रहे हैं। यह धारावाहिक आपको कैसा लगा, हमें आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

-संपादक

Thoughts

The Relationships of Languages

Jawaharlal Nehru

On the occasion of the birth anniversary of Shri Jawaharlal Nehru, our first Prime Minister and one of the legendary visionaries of the world on 14 November 2014, we are producting a letter written by him to his daughter Ms. Indira Gandhi. This letter was written from the prison when Ms. Indira Gandhi was just eight or nine years old. In this letter, Shri Nehru not only shares his knowledge but also reflects his thoughts about the interrelationship between languages and how languages help build up human mind and thus, Literature too. This letter has been taken from the book *Letters from A Father to His Daughter* published by Children's Book Trust.

We have seen how the Aryans spread out over many countries, and carried their language, whatever it was, wherever they went. But different climates and different conditions produced many differences in various groups of the Aryans. Each group went on changing in its own way with new habits and customs. They could not meet the other groups in other countries as it was exceedingly difficult to travel about in those days. Each group was cut off from the others.

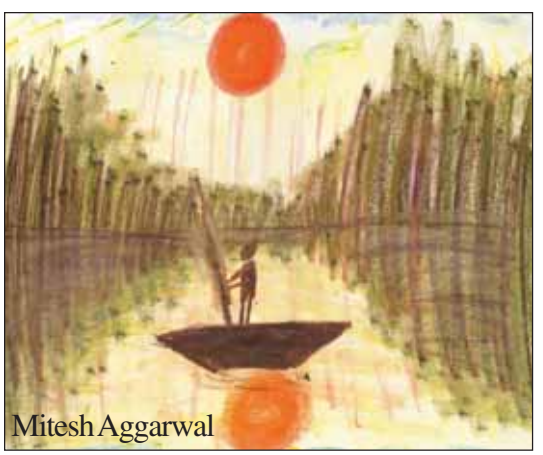

Mitesh Aggarwal

If the people of one country learnt something new they could not tell it to the people of another country. So changes came in, and after some generations the one Aryan family became split up into many. Parhaps they even forgot that they all belonged to one large family. Their one language became many languages, which seemed to differ greatly from each other.

But although they seemed so different there were many common words and similarities. Even now, after thousands, of years, we can find these common words in different languages and can tell that once upon a time these languages must have been one. You know that there are many such common words in French and English. Let us examine two very homely and ordinary words like 'father' and 'mother' in Hindi and Sankrit the words are, as you know पिता and माता; In latin they are 'pater' and 'mater' in Greek 'pater' and 'meter'; in German

'vater' (pronounced फातर) and 'mutter' (pronounced मुतर); in French 'pere' and 'mere'; and so on in many other languages. Do they all not seem to be very much alike? They have a family resemblance, like cousins. Many words, of course, may be borrowed by one language from another. Hindi has borrowed many words from English in this way, and English has borrowed some words from Hindi. But 'father' and 'mother' could not have been borrowed. They cannot be new words. Right at the beginning when people started talking to each other there were of course fathers and mothers and words must have been found for them. Therefore we can say that these words were not borrowed. They must have come down from the same ancestor or the same family. And from this we can find out that the people living far apart now in different countries and using different languages must have belonged once upon a time to the same big family.

You will see how interesting the study of language is and what a lot it teaches us. If we know three or four languages it is not very difficult to learn more languages.

You will also see that most of us now living in different countries far from each other long ago were one people. We have changed greatly since then and many of us have forgotten our old relationships. In every country people imagine that they are the best and the cleverest and the others are not as good as they are. The Englishman thinks that he and his country are the best; the Frenchman is very proud of France and everything French; the Germans and Italians think no end of their countries; and many Indians imagine that India is in many ways the greatest country in the world. This is all conceit. Everybody wants to think well of himself and his country. But really there is no person who has not got some good in him and some bad. And in the same way there is no country which is not partly good and partly bad. We must take the good wherever we find it and try to remove the bad wherever it may be. We are of course most concerned with our own country, India. Unhappily it is in a bad way today and most of our people are very poor and miserable. They have no pleasure in their lives. We have to find out how we can make them happier. We have to see what is good in our ways and customs and try to keep it, and whatever is bad, we have to throw away. If we find anything good in other countries we should certainly take it.

As Indians we have to live in India and work for India. But we must not forget that we belong to the larger family of the world and the people living in other countries are after all our cousins. It would be such an excellent thing if all the people in the world were happy and contented. We have therefore to try to make the whole world a happier place to live in.

मेरा पन्ना

नन्ही बुलबुल

समृद्ध कुमार शर्मा

नन्ही बुलबुल जब छोटी थी तब बहुत खुश रहती थी, लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ी होने लगी, वह उदास रहने लगी। बुलबुल दूध पीती थी, दूध से बनी चीजें खाती थी, लेकिन जब हरी सब्जी और खाना खाने की बारी आती तो बुलबुल खाने को हाथ भी नहीं लगाती। यह देख उसकी मम्मी को बड़ी चिंता होने लगी। एक दिन मम्मी सोच रही थी, 'पता नहीं मेरी बुलबुल को क्या हो गया है? अगर यह अच्छे से खाना नहीं खाएगी तो फिर इसे एनर्जी कहाँ से मिलेगी!' मम्मी को एक आइडिया आया। वह मार्केट से बुलबुल के साथ खेलने के लिए एक कुत्ता ले आई। उसका नाम बुलबुल ने जंबो रख दिया। बुलबुल को खाना खिलाते समय वह जंबो को साथ में रखती थी ताकि जंबो के साथ खेलते-खेलते बुलबुल भी अपना खाना खत्म कर ले, लेकिन बुलबुल मम्मी से छिपकर अपना सारा खाना जंबो को खिला देती थी।

समृद्ध कुमार शर्मा

कुछ महीने बाद मम्मी जब बुलबुल को डॉक्टर के पास लेकर गई तब बुलबुल को देख डॉक्टर आश्चर्यचकित हो गए। बुलबुल का न तो वजन बढ़ा था और न ही लंबाई, बल्कि उसका शरीर पहले से भी ज्यादा पीला दिख रहा था। इतना ही नहीं, बुलबुल छोटी-छोटी बात पर रोने भी लगती थी। यह देख डॉक्टर साहब ने बुलबुल की मम्मी से कहा, "मुझे लगता है कि आप अपनी बेटी बुलबुल को हैल्दी खाना नहीं देती हैं?" डॉक्टर साहब की बात सुन मम्मी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या बोले। मम्मी को हमेशा लगता था बुलबुल अच्छे से खाना खाती है।

कुछ महीने तक तो बुलबुल की हालत ऐसी ही रही बल्कि वह पहले से भी ज्यादा कमजोर दिखने लगी थी। उसकी लंबाई भी नहीं बढ़ रही थी। एक दिन अचानक एक अजीब घटना हुई। बुलबुल ने सपने में देखा कि जंबो उसका सारा खाना खा रहा है। जंबो पहले से भी ज्यादा बड़ा हो गया जबकि वह पहले की तरह दुबली-पतली है। सिर्फ जंबो ही नहीं बल्कि घर के आस-पास के सारे कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, जानवर सभी बहुत बड़े हो गए हैं, सब बहुत डरावने नजर आ रहे हैं। यह देख बुलबुल घबरा गई। वह अचानक नींद से उठ गई और जोर-जोर से रोने लगी। बुलबुल को रोते देख मम्मी भी घबराकर उठ गई और उसे चुप कराने लगी, लेकिन बुलबुल चुप ही नहीं हो रही थी।

समृद्ध कुमार शर्मा

मम्मी को लग रहा था, बुलबुल भूख से रो रही है। यह सोचकर वह उसको दूध पिलाने लगी। लेकिन बुलबुल फिर भी जोर-जोर से रोए जा रही थी। मम्मी परेशान हो गई। थोड़ी देर के बाद बुलबुल ने मम्मी से हरी सब्जी माँगी। यह सुन मम्मी हँसने लगी। अब मम्मी को समझ आ गया कि बुलबुल बड़ी क्यों नहीं हो रही थी।

उस दिन के बाद से मम्मी कभी भी बुलबुल को हैल्दी खाना खाने के लिए जबरदस्ती नहीं करती थी। कुछ सालों बाद बुलबुल ठीक हो गई और अब उसकी लंबाई भी ठीक से बढ़ती जा रही थी। और इस प्रकार बुलबुल की वजन के साथ-साथ लंबाई भी बढ़ने लगी और वह खुश रहने लगी।

दर्शन मेला, चाईबासा
(झारखंड)

My Page

The Dream

Pakhi Saini

I waited at the bench for my 16 year old sister, Reena. She was in the washroom. My mum and dad bought a soft drink for me. Five minutes later my selfish sister called me from the washroom. I sulkily went there. I knew the reason, she was doing makeup and needed me to tell her that if she's doing it all right. We later came out and then went on. We were at the airport to fly to California. This was my first time at an international airport. As we waited in the queue, I took out my lion robot, I had made at home. Reena giggled. She thought that robotics was childish.

Simran Thakur

I gave her a punch. She gave me a sly kick. I blocked it. And this went on until dad had to come and put a stop to it. In the airplane, Reena and I had a fight over the window seat. Finally mum became the judge. She decided that to stop both of us, she will have to sit on the window seat. Totally unfair! Anyway, I sat down next to mum.

It was three in the morning. From my backpack, I took out my robotics kit to make some other thing. Reena gigled again. I ignored her.

After making an aeroplane from the kit, I kept it on Reena's lap. She was sleeping.

Ten minutes later, she woke up and screamed. I laughed. She never liked my tricks. I picked the plane up before Reena smashed it on the ground.

We were all sleepy. I watched an episode of *Hannah Montana* and then went to sleep. The whole plane was silent.

And suddenly, I found myself surrounded by building blocks. I screamed and screamed. I saw people walking by, people made up of building blocks. I cried...

On the other side, I saw disgusting, ridiculous zombies coming towards me. I thought it was a dream...

I tried to open my eyes but in vain. Within no time, the zombies climbed over me and bit me.

I lost all of my hope and started to fall when I saw my own built plane and lion coming to me.

The zombies ran away.

I sat on the plane and managed to fly it. But the engine lost its power and the plane crashed...

And finally I woke up. Looking at my mum, I cried. She woke up and saw my arms and face bleeding...

Reena cried, "Woaw! Did your dream come true or what?"

VV DAV Public School
D-Block, Vikaspuri, New Delhi

My Trip to Palampur

Chaitanya Srivastava

My summer vacations had just started. We decided to go to a hill station. We chose Palampur in Himachal Pradesh. We boarded our train in New Delhi. Una was the last station *en route*. So we took a taxi for our further journey.

On both sides along the road, there were mango trees, fields of wheat and rice with greenery all around. Farmers were working in the fields and also grazing their cattle. Soon I fell asleep. When I woke up we were just about to reach there. I could see beautiful mountain covered with trees. On reaching there we first went to our hotel and took rest.

Next day we went near the mountain for trekking. We took all our equipment and started to trek. It was a very rocky and uneven terrain. It was very difficult to reach to the top of it. On reaching there, we could have a glimpse of the whole city of Palampur. It was very amazing and fascinating view.

The sun was about to set and we also started to climb down. It was very tiring. We rested in our rooms, had our dinner and slept.

Next we went for rafting in river nearby. The water was very chill and flowing at fast pace. While rafting due to sudden flow of water our raft was just about to lose the balance but the guide intervened immediately and saved us. We were very tired after rafting.

We came to our hotel and had our lunch. We then all slept till 5'o clock. We all had a cup of tea and went for a nature walk. Our guide took us to a nearby forest and told us about the animals and birds. There we saw many birds and animals. He told us about the ecosystem of Palampur and how it is getting disturbed. We returned, packed our bags as we had to go back home next day.

Delhi Public School
Sector 44, Gurgaon (Haryana)

मेरा पन्ना

पतंग की ऊँचाई

कमल रश्मि

एक शिष्य ने गुरु जी से कहा कि आप सदा कहते हैं कि सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ चुके व्यक्ति को भी नैतिकता नहीं त्यागनी चाहिए। किंतु मुझे लगता है कि एक निश्चित ऊँचाई पर पहुँचने के बाद मनुष्य का इन बंधनों से मुक्त होना जरूरी है। गुरु जी ने कहा, ''चलो, पहले पतंग उड़ाते हैं। आज मकर संक्रांति का पर्व है। माना जाता है कि इस दिन पतंग उड़ाना शुभ है।''

शिष्य और गुरु दोनों मैदान में पतंग उड़ाने लगे। जब पतंग एक निश्चित ऊँचाई पर पहुँच गई तो गुरु ने शिष्य से कहा, ''क्या तुम बता सकते हो कि ये पतंगें आकाश में इतनी ऊँचाई तक कैसे पहुँची?''

शिष्य ने जवाब दिया, ''पतंगें हवा के सहारे इतनी ऊँचाई तक पहुँची हैं।''

कमल रश्मि

गुरु ने सवाल किया, ''तो इसमें डोर की कोई भूमिका नहीं है?''

शिष्य ने कहा, ''मैंने ऐसा कब कहा? शुरू में डोर ने कुछ भूमिका निभाई है। पतंग आगे की ऊँचाई तो हवा के सहारे ही पा सकती है। जब तक ढील नहीं दी जाएगी यह आगे नहीं बढ़ सकती।''

अचानक एक झटके के साथ गुरु ने शिष्य की पतंग काट दी। पतंग नीचे आ गिरी। गुरु ने कहा, ''पुत्र, तुम्हारे अनुसार तो उसे आसमान में और भी ऊँचाई को छूना चाहिए था, जबकि मेरी पतंग अभी भी ऊँचाई पर है।''

शिष्य शांत होकर बातें सुनता रहा। गुरु ने समझाते हुए कहा, ''दरअसल, तुम्हारी पतंग ने जैसे ही मूल्यों और संस्कार-रूपी डोर का साथ छोड़ा वह ऊँचाई से सीधे जमीन पर आ गिरी। इस तरह जो इनसान हवा-रूपी झूठ के आधार के सहारे टिके रहते हैं नियंत्रण के बाहर जाते ही उनका भी यही हाल होता है।''

शिष्य को गुरु जी की सारी बातें समझ में आ गईं। यही था गुरु की तरफ से शिष्य को मकर संक्रांति का सच्चा ज्ञान।

दर्शन मेला, चाईबासा
(झारखंड)

My Page

The Story of Malti

Shatakshee Kar

Once in a small village near Patna, there lived a man named Lalchand. He had a small house in which he lived with his wife, Chandramukhi and daughter, Malti. He was not poor but also not rich. He had enough money in which he and his family could eat properly and fulfill their basic needs.

One day, while Malti was on her way to home, she saw that the well of the village had dried up. As most of the villagers earned their income from farming, Malti was worried that they would not have adequate water to do farming and would have no food to eat. There was one small pond about three kilometres away from the village. Malti thought that the pond can help for a few days but what about the ladies who have to walk long distances for water? They would get so tired!

On a Saturday morning, Malti went out and sat near the well to think of some idea to solve the problem. She was not able to think. Suddenly, she saw an old woman who was carrying vegetables in both her hands. Malti had never seen her earlier. The vegetables looked very heavy. Malti helped the woman by carrying the vegetables for her. The old woman was very happy and gave a five rupees coin to her. Malti happily returned to the well and was looking inside it when the coin slipped from her hand and fell in the well! She said to herself, "What bad days have come! First the well dried up and now my coin has also fallen inside it." Malti was disappointed and went home.

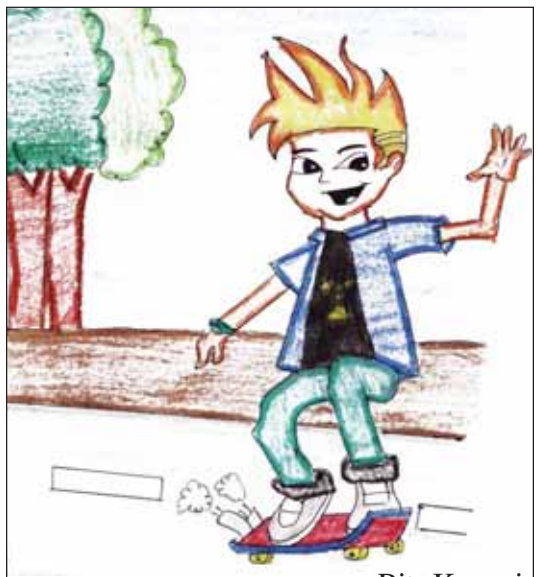

Ritu Kumari

Next morning, when she woke up, she could hear the sound of laughter. She went out and saw that a group of men and women had gathered around the well and were laughing and talking. She walked up to the well and saw that it was full of water! She was confused and wondered from where the water had emerged. It was a miracle!

Malti understood a little later that the old woman she had helped was a *Devi* (goddess) who had come down from the clouds to help the villagers. She had never seen the woman earlier and she was nowhere to be seen again. Malti thanked the goddess from her heart and merrily laughed and danced with the villagers.

Delhi Public School,
Noida-201301 (U.P.)

मेरा पन्ना

शालू को मिली जादू की छड़ी

अजय कुमार

एक रात की बात है। शालू अपने बिस्तर पर लेटी थी। अचानक उसके कमरे की खिड़की पर बिजली चमकी। शालू घबराकर उठी। उसने देखा कि खिड़की के पास एक बुढ़िया हवा में उड़ रही थी। बुढ़िया खिड़की के पास आई और बोली, ''शालू, तुम अच्छी लड़की हो। इसलिए मैं तुम्हें कुछ देना चाहती हूँ।'' शालू यह सुनकर बहुत खुश हुई। बुढ़िया ने शालू को एक छड़ी देते हुए कहा, ''यह जादू की छड़ी है। तुम इसे जिस भी चीज की तरफ मोड़कर दो बार घुमाओगी, वह गायब हो जाएगी।''

अगले दिन सुबह शालू वह छड़ी अपने स्कूल ले गई। उसने पहले सामने बैठी लड़की की किताब गायब कर दी, फिर कई बच्चों की रबर और पेंसिल गायब कर दीं। किसी को भी पता न चला कि यह शालू की छड़ी की करामात है।

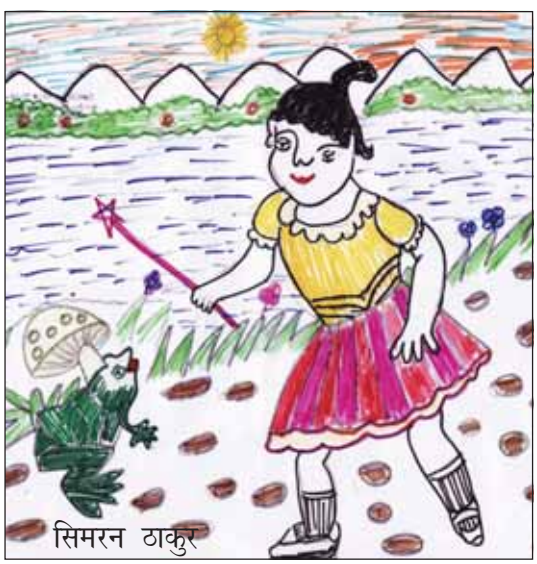

सिमरन ठाकुर

जब वह घर पहुँची तब भी उसकी शरारतें बंद नहीं हुईं। रसोई के दरवाजे के सामने एक कुरसी रखी थी। उसने सोचा, क्यों न इस कुरसी को गायब कर दूँ। जैसे ही उसने छड़ी घुमाई वैसे ही शालू की माँ रसोई से निकलकर कुरसी के सामने से गुजरी और कुरसी की जगह शालू की माँ गायब हो गई। शालू बहुत घबरा गई और रोने लगी। इतने में ही शालू के सामने वह बुढ़िया प्रकट हुई। बुढ़िया ने शालू से कहा, ''मैं तुम्हारी माँ को वापस ला सकती हूँ, लेकिन उसके बाद मैं तुमसे ये जादू की छड़ी वापस ले लूँगी।'' शालू बोली, ''तुम्हें जो चाहिए ले लो, लेकिन मुझे मेरी माँ वापस ला दो।'' तब बुढ़िया ने एक जादुई मंत्र पढ़ा और देखते-ही-देखते शालू की माँ वापस आ गई।

शालू ने मुड़कर बुढ़िया का शुक्रिया अदा करना चाहा, लेकिन तब तक बुढ़िया बहुत दूर बादलों में जा चुकी थी। शालू अपनी माँ को वापस पाकर बहुत खुश हुई।

दर्शन मेला, चाईबासा
(झारखंड)

मेरा पन्ना

नकल का चक्कर

स्पर्धा कुमारी

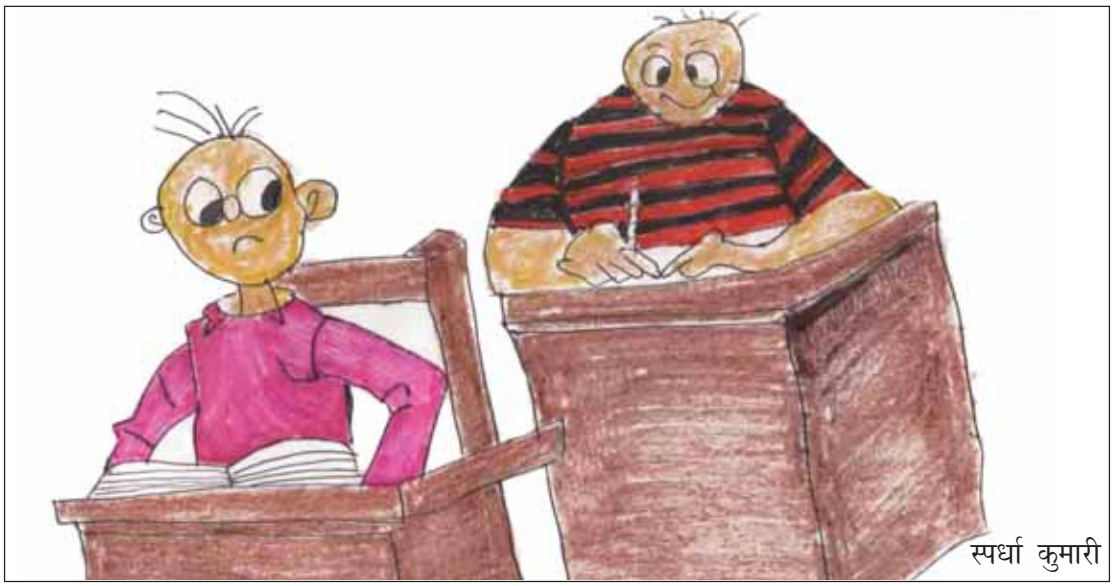
स्पर्धा कुमारी

स्कूल में फाइनल परीक्षा शुरू होने वाली थी, पर रोनित परेशान था। उफ्, क्या करूँ? दरअसल, उसकी क्लास में ही मणि पढ़ता था—भारी-भरकम, पर पढ़ने में फिसड्डी। वह रोनित पर रोब जमाकर नकल मारता था— "खबरदार, किसी को बताया तो...!"

मेरी नकल मारकर मुझसे आगे...! रोनित यह सोच-सोचकर परेशान था। परीक्षा परिणाम आता तो मणि फर्स्ट आ जाता। भारी-भरकम मणि से डर के मारे रोनित कुछ न बोल पाता। लेकिन इस बार रोनित ने पक्का इरादा कर लिया था कि मणि को नकल कर आगे न जाने देगा।

पेपर शुरू हुआ। रोनित जो लिखता, उसके पीछे बैठा मणि फटाफट नकल कर लेता। रोनित जानबूझकर मेन प्वाइंट गलत लिखता, फिर मणि द्वारा नकल करने के बाद मिटाकर ठीक कर लेता। कर लो बेटा नकल, बच्चू छोड़ेगा नहीं!

पेपर खत्म हुआ। दोनों क्लास से बाहर निकले। "मैं फिर फर्स्ट आऊँगा!" मणि ने हुंकार भरी। और रिजल्ट आया तो...इस बार मणि सब पेपर में फेल है। मणि शर्म से सिर झुकाकर खड़ा हो गया और बोला, "नकल का चक्कर ठीक नहीं। पढ़ना ही ठीक है।"

दर्शन मेला, चाईबासा
(झारखंड)

My Page

The Noodle Company

Rashi Dewan

Once upon a time, there was a tiger called Kaalu. He had a daughter called Miski. When Miski was ten years old, Kaalu asked her, "What do you want to become when you grow up?" Miski thought about it thoroughly but could not decide.

Kaalu took Miski to his office and tried to build her interest there, but Miski did not like sitting in the office. One day when Miski was watching television, she started watching cookery channel instead of her favourite cartoon channel. She enjoyed watching it. She was fascinated to see how little sheets of flour were converted into noodles.

Miski started making a variety of noodles. She made different coloured noodles—red, green, yellow. Then one day she went to her father and said, "Daddy, I think I know what I want to do. I want to make noodles". Kaalu jumped with joy. He was very happy to know that his daughter loves to cook noodles.

Miski made different kinds of noodle dishes, noodle soups, etc. Kaalu opened a noodle restaurant for Miski and named it the 'Noodle Company'. Miski happily served noodles to everyone in the village forever.

122, Kailash Hills
New Delhi-110065

Vyomesh Rastogi

मेरा पन्ना

बरगद की डालियाँ ही बन जाती हैं तना

सुकुमार दत्ता

बरगद का वैज्ञानिक नाम फिकस वेनगैलेसिस है। यह भारत के लगभग सभी प्रदेशों में पाया जाता है। इसकी खासियत इसकी शाखाएँ होती हैं। शाखाओं से विशेष प्रकार की पतली जड़ें निकलती हैं, जो जमीन की सतह के अंदर तक चली जाती हैं और तना का रूप ले लेती हैं।

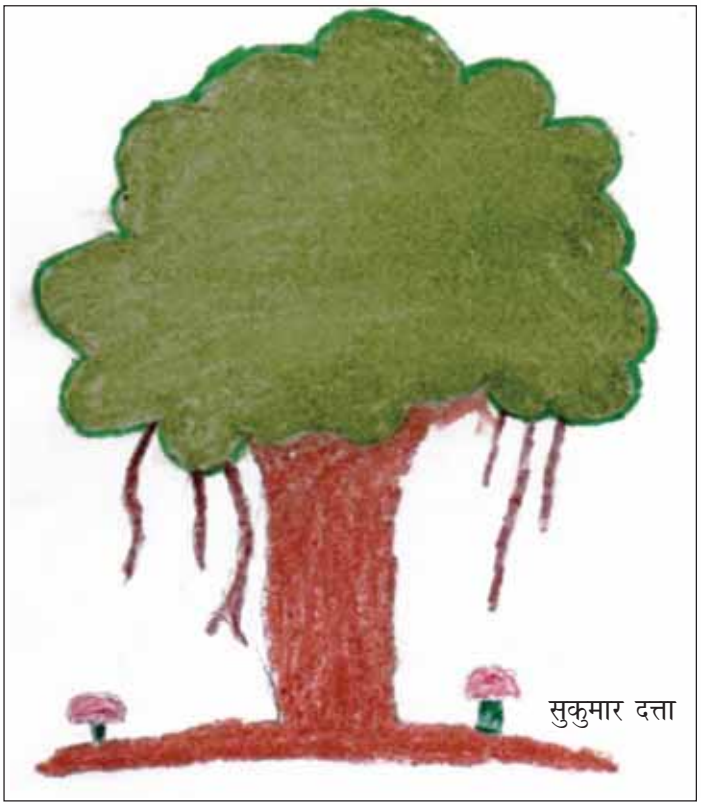
सुकुमार दत्ता

भारत में बरगद के दो सबसे बड़े पेड़ कोलकाता के राजकीय बाग में और महाराष्ट्र के सतारा बाग में हैं। कोलकाता के शिवपुर के वटवृक्ष की मूल जड़ का घेरा 42 फुट और अन्य छोटे-छोटे 230 स्तंभ हैं। इनकी शाखा, प्रशाखाओं की छाया लगभग 1000 फुट की परिधि में फैली हुई है।

सतारा के वटवृक्ष 'कबीर वट' की परिधि 1587 फुट है। उत्तर-दक्षिण 565 फुट और पूरब-पश्चिम 442 फुट है।

श्रीलंका में एक वटवृक्ष है जिसमें 350 बड़े और 3000 छोटे-छोटे स्तंभ हैं। बरगद की छाया घनी, बड़ी शीतल और ग्रीष्म काल में मन को शांति प्रदान करती है। इसकी छाया में हजारों व्यक्ति एक साथ बैठ सकते हैं।

बरगद के फल पीपल के फल जैसे ही छोटे-छोटे होते हैं। इसकी लकड़ी कोमल होती है। इसके रस, छाल और पत्तों का उपयोग आयुर्वेद में औषधियों के रूप में किया जाता है। वृक्ष पर लाख के कीड़े बैठाए जा सकते हैं, जिससे लाख भी प्राप्त होती है।

दर्शन मेला, चाईबासा
(झारखंड)

मेरा पन्ना

चित्रकार की चतुराई

अभिनास दास

एक बार एक चित्रकार सुनसान जंगल में चित्र बना रहा था। तभी वहाँ एक शेर आ गया। उसे देखकर चित्रकार के होश उड़ गए। कुछ देर बाद उसे थोड़ी हिम्मत आई। उसने शेर से कहा, "क्या मैं आपका चित्र बना सकता हूँ?" शेर राजी हो गया।

चित्रकार ने चित्र बनाना शुरू किया। कुछ देर बाद आगे का चित्र तैयार हो गया। चित्रकार ने शेर से कहा, "आगे का चित्र तैयार हो गया है। अब आप पीछे मुड़कर बैठ जाइए।" शेर पीठ घुमाकर बैठ गया। तभी चित्रकार वहाँ से धीरे-धीरे भाग गया। इधर, शेर बैठे-बैठे हैरान हो रहा था कि आगे का चित्र तो जल्द तैयार हो गया था, मगर पीछे का चित्र बनने में देर क्यों हो रही है!

सामने में ही एक नदी थी। नदी के किनारे एक नाव भी थी। चित्रकार नाव लेकर आगे बढ़ा। इधर, शेर इंतजार करते-करते थककर चूर हो गया था। तभी वह चिल्लाकर बोला, "अरे, नाव तो जरा रोक, कागज और कलम तो ले जा कायर, डरपोक!" तभी चित्रकार ने तुरंत कहा, "रखिए अपने पास, चित्रकला का आप कीजिए जंगल में अभ्यास!"

सीख—हमें मुसीबत के समय कभी नहीं डरना चाहिए और उस मुसीबत का सामना डटकर करना चाहिए।

दर्शन मेला, चाईबासा
(झारखंड)

अभिनास दास

My Page

Quarrel of the Colours

Adhiraj Mahajan

Sukumar Dutta

Once opon a time the beautiful colours of the world started quarrelling with each other. Each one said that it was the most important and the favourite colour of the world.

Green said, "I am the colour of trees and grass." Blue said, "I am the colour of sea, ocean and sky". Brown said, "I am the colour of earth." Yellow chuckled, he said, "I am the colour of the sun and I give you warmth." Red got impatient and said, "I am the colour of blood, love and danger". Orange argued, "I am the colour of healthy vegetables and fruits like mango, orange, papaya, carrots, etc." Indigo said, "I am the colour of ink—without me no one can write on a sheet of paper."

Suddenly lightning flashed and rain came out and said, "You fool colours, do you know, you all are special, come with me, join hands and make a rainbow which is a sign of hope and peace and if a good rain washed the earth, a rainbow appears so don't quarrel with each other and be friends."

Raghubir Singh Junior Modern School
Humayun Road, New Delhi-110003

Iron Man Sardar Vallabhbhai Patel

Surekha Panandiker

Sardar Vallabhbhai Patel, our first Home Minister and freedom fighter was born on 31st October, 1875 in Gujarat. He was a close associate of Mahatma Gandhi and actively participated in the freedom movement. He played a major role in integration of princely states into India. His birth anniversary is being celebrated as National Unity Day. On this occasion we are producing a write-up on Sardar Patel, written by noted children's author Surekha Panandiker, which shows his innate qualities that made him a great leader.

"Get out of the class. If you do not pay the fine you have no right to be in the class. "Please Sir, my parents do not have money to pay the fine".

"Do not answer me back. I do not want any excuses. Just get out," the teacher ordered Keshav out.

Poor Keshav had to obey. Just behind came Vallabh, Gopal, Mohan and others. They felt angry at the injustice of the teacher.

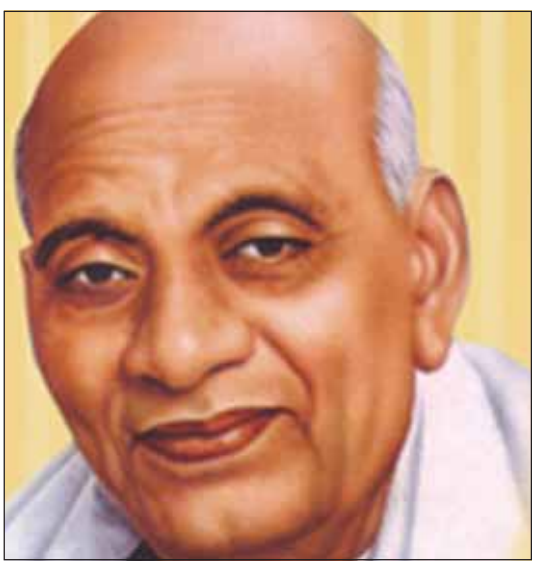

"We will boycott the school," declared Mohan. "Yes, we should not go to the class. The teacher was unkind and unjust." Others agreed.

"We can boycott the school in protest. But everyone must agree. Not a single student should attend the class, then only our protest will be successful," Vallabh advocated the formula for success.

"Yes, we are all together," chanted the students. Next day, there was not a single student in the school. The second day also saw, the empty school. On the third day, the principal went to the houses of students. They were not there. Nor were they loitering in the village.

"Where are they?" Parents and teachers were worried. All joined the search.

At last they found them studying quietly in the big *Dharmshala*. Senior students were helping and guiding young ones. And their leader Vallabh was supervising while reading his own book.

The principal had to apologize to Vallabh and students. He assured the students that no one will be punished unjustly.

This was the first lesson in peaceful 'Satyagrah' for both, future freedom fighters and their leader.

Though Vallabhbhai protested against the teacher, he had full respect for learned teachers. Once, such an ideal teacher stood for a local municipal election. He had no funds to spend on campaign and other election expenditure. His rival was a rich man. He was sure of his victory.

Vallabhbhai persuaded his friends and schoolmates to work for the teacher. Their voluntary hard work and sincerity paid. The teacher won the election. This was the prelude to many successful election campaigns organized and won by Vallabhbhai. This organizing skill was utilized for wider national purposes by Mahatma Gandhi. Vallabhbhai plunged into the freedom struggle under the leadership of Mahatma Gandhi.

He perfected the technique of peaceful non-cooperation or satyagrah preached by Gandhiji.

This first test was in Kaira. In that year, farmers suffered losses due to destruction of crops because of heavy rains and floods. They requested the government to put off the collection of land revenue. The government refused. Vallabhbhai came to their help. He organized the 'No Tax' campaign on peaceful Gandhian way. He dressed like them and spoke their language. He stood by them and encouraged them to stand firm and refuse to pay land revenue. The government took their land and cattle. But the farmers did not surrender, ultimately the government had to agree to farmers' request.

This success lead to another 'No Tax' campaign at Bardoli in 1928. This time government increased the tax on land. Vallabhbhai advised farmers not to pay unjust increase. He explained and convinced the farmers to follow Gandhian ideas of peaceful resistance. He cautioned them against hardships and difficulties involved. He prepared them physically and morally. The government jailed the farmers, confiscated their cattle and property.

But women of Bardoli stood fast against all intimidation and difficulties and continued the struggle. They were not cowed down even when the government sent the fierce looking Pathans to collect the tax. They boycotted government servants. They did not sell to them vegetables, milk and other necessities. After six months the government had to relent. They released the farmers and returned their land and property.

Pleased with his success, Gandhiji described him as Sardar—the teacher. Sardar Patel led many campaigns or non-cooperation movements including salt satyagrah, flag satyagrah in Nagpur, and individual satyagrah etc. His rustic language made him popular with people while his common sense and sharp analytical mind, cowed down the opponents.

The independence came with a price of partition of the country, riots broke out. Sardar Patel as a Home Minister controlled them with firm hand. He saved lives of thousands of Muslims by putting them under army protection in the Red Fort.

India also had to face the problem of consolidating princely states. The British government had given them the choice of either joining India or Pakistan or remain a separate state. Like a shrewd administrator Sardar Patel used *sam, dam, dand*, that is pursuation, price and punishment. He appealed, "we are all Indians knit by the bonds of blood and feelings. Therefore it will be better if we make laws together as friends for the welfare of our people." This had positive effect. Rulers on Indian side of the border joined India. Those who played truant were dealt with iron hands of army and police. Sardar Patel was not a heartless man. He did not make those Indian princes pauper. He gave them the privy purses and few privileges.

Sardar Patel knew that an intelligent and patriotic bureaucracy, or a team of government servants is a must for governing a big country like India. Instead of condemning them for serving then British government, he trusted their patriotism and appealed to them to cooperate to build new India. The bureaucracy felt proud and worked sincerely to honour the faith reposed in them by the great leader Sardar Patel.

Sardar Patel did not forget to send gifts and greetings to his friends and their family in spite of his busy schedule and heavy work load. Once he came to know that family of one of his colleagues was surviving on pumpkin and leaves of bitter gourd from their kitchen garden. Because of the curfew they could not get wheat flour or rice from the market. Within an hour he sent an army jeep with sack of wheat flour, vegetables and potatoes.

When things became normal children of that family went to thank him. He asked to serve sweet 'suji ka halwa' to them. Children relished it. Then mischievously asked which is bitter, this *halwa* or the *karela* (bitter gourd) you ate for few days and laughed heartily. Children joined him. That was the human side of the Iron Man of India Sardar Vallabhbhai Patel.

T-31/501, CWG Village
Near Akshardham, Laxmi Nagar,
New Delhi-110092

पिंकी और उल्लू दादा

क्षमा शर्मा

पिंकी का नाम किसने पिंकी रखा था उसे मालूम नहीं। हो सकता है उसकी माँ ने रखा हो या नानी ने। क्या पता यह नाम उसके पापा को पसंद आया हो या कि दादा या दादी को। जो भी हो, जंगल में सब उसे पिंकी पुकारते। नाम बिगाड़ना हो या मजाक करना हो तो कहते, पिंकी कि चिंकी या फिर कहो कि पानी की टंकी।

उसके सारे दोस्त और जो दोस्त नहीं भी थे, हँस-हँसकर लोट-पोट हो जाते। पहले पिंकी बहुत बुरा मानती थी, मगर धीरे-धीरे बुरा मानना छोड़ वह भी अपने दोस्तों की बातों पर हँसती थी। हँसती ही जाती थी। जब सबने देखा कि उसे चाहे जितना चिढ़ाओ, वह नाराज ही नहीं होती तो चिढ़ाने वालों ने चिढ़ाना ही छोड़ दिया था।

एक दिन की बात है कि पिंकी अपने घोंसले में बैठी थी। उसने अपना घोंसला जंगल के सबसे ऊँचे पेड़ पर बनाया था जिससे कि घोंसले में

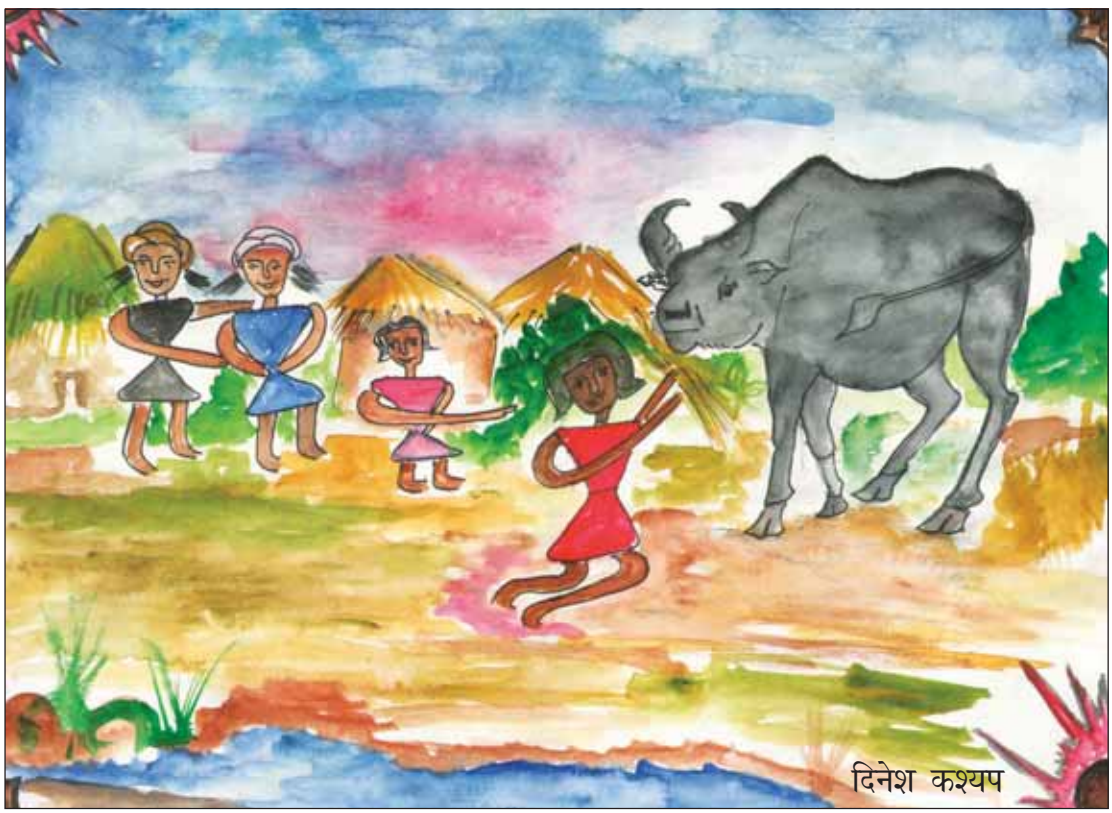

बैठी-बैठी ही जंगल का सारा नजारा देख सके। अचानक उसने देखा कि उल्लू दादा उसकी तरफ उड़े चले आ रहे हैं। उसने उन्हें देखते ही प्रणाम किया।

कहा, ''बताइए दादा, कैसे आना हुआ। कोई खास बात? जहाँ तक मुझे मालूम है आप दिन में किसी के घर आते-जाते नहीं हैं।''

''हाँ बिटिया, बात ही कुछ ऐसी है। पहले मैं सोच रहा था कि तुम्हें न बताऊँ। लग रहा था कि बेकार में तुम्हें डराने से क्या फायदा। फिर नहीं रहा गया तो आया हूँ।''

''बताइए न दादा, ऐसी क्या बात है?'' पिंकी ने कुछ चिंतित होते हुए पूछा।

उल्लू दादा ने उसके पास अपना मुँह लाते हुए कहा, ''मुझे नहीं मालूम कि तुम्हें पता है कि नहीं, मगर एक काला साँप तुम्हारे इस पेड़ की जड़ में रहने लगा है। यह बड़ा बदमाश साँप है। और तुमने अभी-अभी अंडे दिए हैं। इसलिए अब जब कभी जंगल में दाना ढूँढ़ने जाओ, किसी-न-किसी को अंडों की रखवाली करने जरूर छोड़ जाना, वरना क्या पता यह साँप कब तुम्हारे घोंसले तक आ पहुँचे!''

दादा की बात सुनकर पिंकी सचमुच घबरा गई। हर रोज कौन उसके अंडों की देखभाल करेगा। आखिर सभी को अपने-अपने काम होते हैं। क्यों न दूसरे जंगल में अपने घरवालों के पास चली जाए! मगर वहाँ तक अंडों को कैसे ले जाएगी? पिंकी ने चिड़े को सारी बात बताई। चिड़ा बोला, ''आखिर इन अंडों से जो बच्चे निकलेंगे वे मेरे भी तो होंगे। ऐसा करते हैं बारी बाँध लेते हैं। जब तुम दाना ढूँढ़ने जाओगी, मैं यहाँ रहूँगा। जब मैं जाऊँ, तुम रहना।'' अब वे दोनों साँप की निगरानी करने लगे। साँप उसी पेड़ के नीचे रहता था जहाँ वे रहते थे। मगर उन्होंने आज तक उसे नहीं देखा था।

एक सवेरे वह उन्हें दिख ही गया। वह अपने बिल से निकलकर रेंगता हुआ जा रहा था।

''तो यह है हमें डराने वाला। अब तो यह चला गया है। हम दोनों भी चलें दाना ढूँढ़ने।'' पिंकी ने कहा तो चिड़ा बोला, ''नहीं, क्या पता वह कब वापस आ जाए!''

पिंकी के घर के पास साँप रहता है, यह बात जंगल के सभी पशु-पक्षियों को मालूम हो गई थी। इसलिए आते-जाते वे उन दोनों को साँप के बारे में बताते रहते थे—

कि आज वह उन्हें नदी किनारे दिखा था तो आज उसने एक चूहे के बिल में घुसकर उसका शिकार किया है कि आज वह एक पेड़ पर चढ़ रहा था, आदि-आदि।

ये बातें सुनकर पिंकी को डर लगता। तो चिड़ा उसे समझाता, ''डरने की कोई बात नहीं। जल्दी ही अंडों से बच्चे निकल आएँगे। तब साँप उनका क्या बिगाड़ पाएगा। वह उनकी तरह आसमान में उड़ तो नहीं सकता न!''

चिड़े की बात सुनकर पिंकी को दिलासा मिलती, लेकिन फिर परेशान हो उठती। रात में

उठ-उठकर देखती कि कहीं साँप तो पेड़ पर चढ़कर नहीं चला आ रहा!

एक बार दो दिनों तक लगातार तेज बारिश होती रही। पिंकी और चिड़ा कहीं नहीं जा सके। भूख से उन दोनों का बुरा हाल था। पिंकी ने चिड़े से कहा कि पहले वह खाना ढूँढ़ने चला जाए। जब वह लौट आएगा तो वह जाएगी।

उसकी बात मानकर चिड़ा उड़ गया। पिंकी वहीं बैठी उसके लौटने का इंतजार करने लगी।

अरे, यह क्या! अचानक उसकी नजर पेड़ के तने पर पड़ी। अब तो उसके होश उड़ गए। साँप चढ़ता हुआ उसके घोंसले की तरफ बढ़ा चला आ रहा था। बारिश के कारण दो दिनों से उसे भी कोई शिकार नहीं मिला था। अब पिंकी क्या करे! किसे सहायता के लिए पुकारे? आज तो बारिश बंद हुई है तो उसके चिड़े की तरह सभी खाना-दाना ढूँढ़ने गए होंगे। कौन उसे बचाने आएगा? साँप पास आता जा रहा था। पिंकी जोर-जोर से फुदकने लगी और आवाज लगाने लगी, ''बचाओ, बचाओ!''

तभी कोई पेड़ पर उसके पास झप्प से आकर बैठ गया। उसने देखा, उल्लू दादा थे। उल्लू दादा को देख पिंकी की जान-में-जान आई। वह ठीक उसी जगह बैठ गए जहाँ से साँप पिंकी के घोंसले की तरफ बढ़ता। जैसे ही वह नजदीक आया कि उल्लू दादा ने अपनी तीखी चोंच पेड़ के तने पर मारी।

देखते-देखते गोंद की एक मोटी धारा नीचे साँप तक पहुँची। साँप ने बहुत कोशिश की

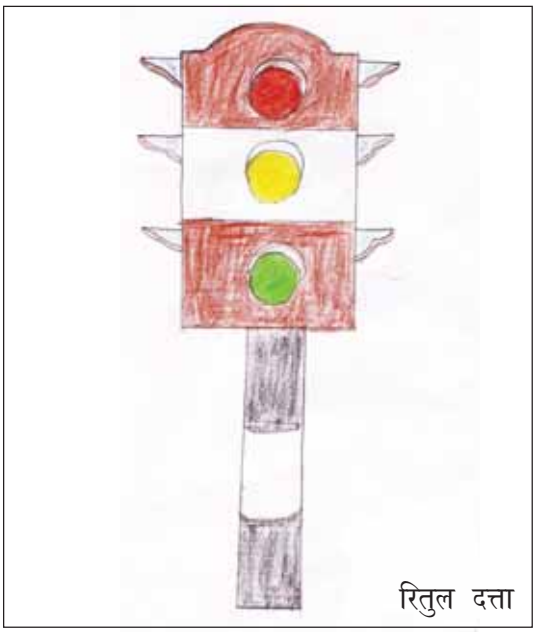

रितुल दत्ता

बचने की। मगर वह बच न सका। फिसलकर नीचे गिरा, धड़ाम!

पिंकी की आँखों में आँसू आ गए। आज उल्लू दादा न होते तो पता नहीं क्या होता!

उल्लू दादा बोले, ''अब यह कभी इधर आने की हिम्मत नहीं करेगा, और फिर कभी ऐसा होता है तो वही करना जो मैंने किया। असली धन्यवाद तो हमें पेड़ को देना चाहिए जिसने हमारे बच्चों की रक्षा का इंतजाम किया है।'' कहकर वह उड़ गए। पिंकी अब निश्चिंत थी। वह भी जब चाहे तब साँप को पेड़ से नीचे गिरा सकती थी।

17, बी-1-एच
हिंदुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट्स
मयूर विहार, फेस-1, नई दिल्ली-110091

हाथी दादा की लॉटरी

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'

एक थे हाथी दादा। रातों-रात अमीर बन जाना चाहते थे। लेकिन मेहनत के नाम से कोसों दूर रहते थे। एक दिन किसी ने उन्हें रातोंरात अमीर बन जाने का उपाय बता दिया। उपाय यह था कि वे अपने सभी पैसे लॉटरी के टिकट खरीदने में खर्च करें। फिर देखें कि वे कैसे जल्दी से करोड़पति बन जाते हैं। हाथी दादा ने जब यह बात सुनी तो खुशी के मारे उछल पड़े। फिर क्या था! वे धड़ल्ले से लॉटरी के टिकट खरीदने लगे। धीरे-धीरे उनके सारे पैसे लॉटरी के टिकट खरीदने में ही खर्च होने लगे।

हाथी दादा अब तक कई सौ टिकट खरीद चुके थे, लेकिन इनाम के नाम पर एक फूटी कौड़ी भी नसीब नहीं हुई थी। अब तो उनके सारे पैसे भी खत्म हो चुके थे। कुछ भले मन के जानवरों ने उनसे कहा कि यह सब बेकार का धंधा छोड़कर वे मेहनत करें, तभी अमीर बन सकते हैं। लेकिन दादा साहब थे कि उनकी बातें अनसुनी कर देते। उन्हें तो फटाफट अमीर बनने की पड़ी थी। भला ऐसी बातें कैसे सुन सकते थे?

एक दिन की बात है। उन्होंने अखबार में भीमनगर लॉटरी का विज्ञापन पढ़ा। एक करोड़

का इनाम था और टिकट का मूल्य था सौ रुपये। हाथी दादा की जेब खाली थी। एक तरफ एक करोड़ की भरमार, दूसरी तरफ जेब से लाचार। बेचारे हाथी दादा क्या करें? कहाँ से लाएँ सौ रुपये? वह रुपयों के इंतजाम को लेकर सोचने लगे। लाख माथापच्ची की, लेकिन कोई उपाय नहीं सूझा। अचानक उनके मन में एक योजना आई। जंगल में कालू खरगोश की बगिया ढेर सारे मीठे व पके आमों से लदी हुई थी। हाथी दादा ने वहाँ चोरी करने का निश्चय किया। उसी रात जब सभी जानवर सो रहे थे तो वे चुपके से निकल पड़े और कालू खरगोश की बगिया में पहुँचकर उन्होंने ढेर सारे आम तोड़ लिए।

अगले दिन आम बेचकर जो पैसे मिले, उनसे हाथी दादा ने भीमनगर लॉटरी के टिकट खरीद लिए। वे मन-ही-मन काफी खुश थे कि अब वे एक करोड़ रुपये के मालिक होंगे। और चोरी की भी किसी को कानोंकान खबर नहीं हुई। अगले दिन लॉटरी का परिणाम निकलने वाला था। हाथी दादा ने आज ही पूरे जंगल में शोर मचा दिया था कि कल वे करोड़पति बनने जा रहे हैं। जानवरों ने जब उनकी यह बात सुनी तो मन-ही-मन हँसने लगे।

अगले दिन हाथी दादा 'जंगल टाइम्स' अखबार लेकर बाग में पहुँच गए। आज वे फूले नहीं समा रहे थे। आज लॉटरी का परिणाम छपा था। जल्दी-जल्दी वे अपनी लॉटरी का अंक मिलाने लगे। लॉटरी तो नहीं निकली थी, लेकिन दूसरे पृष्ठ पर उनकी फोटो जरूर छपी थी। अखबार

अमीषा

में अपनी फोटो देखकर उनकी आँखें चमक उठीं। फोटो के नीचे लिखा था, 'हाथी दादा ने मेरी बगिया से ढेर सारे आम चुरा लिए हैं और खुद लापता हैं। जो भी उन्हें पकड़ेगा उन्हें दो सौ रुपये का इनाम दिया जाएगा।' निवेदक कालू खरगोश।

इतना पढ़ते ही उनके होश उड़ गए। वे अखबार वहीं पटककर भागने ही वाले थे कि पुलिस ने आकर उन्हें धर दबोचा। बेचारे हाथी दादा! करोड़पति तो नहीं बन पाए, लेकिन अपनी करोड़ों की इज्जत को धूल में मिलाकर चोर जरूर बन गए।

drsunilsuman.jnu@gmail.com

Learn to Love

Dr Mani Ram Jena

Days back there was a kingdom named Pratapgarh. The king of that kingdom Uday Bikram Pratap Dev, loved his subjects very much. He was a great scholar and as a righteous king loved justice. He looked after his subjects as his children. Giving justice was paramount for him. Because of his charming behaviour and candid personality, the kings of neighbourhood kingdoms also loved him. They had accepted him as their icon. Hence there was no threat of enemy attack on the kingdom.

Simran Thakur

Pratapgarh was full of forests, rivers, streams and other natural resources. It also received regular and adequate rainfall. The subjects were living happily practicing agriculture, animal husbandry, trade and commerce.

There is a saying, that no one ever has either good days or bad days throughout the life. One day the king received news that immense disruption is spreading in the kingdom. Wild animals like lions, tigers, bears, elephants are coming out of the forest and attacking human beings and breaking their houses. Being wild they also killed the human beings.

The king became tensed. What could be the reason for this? While ruling the kingdom for so many years since his adolescence, such

an incident had never happened when the wild animals devastated life and valuables like this. Then why is this deviation now. To know the reason the king immediately called on his nobels, ministers and the courtiers for a conference.

All the ministers, nobles and courtiers participated in the meeting and presented their opinions. Someone suggested constructing a boundary around the forest, another one suggested to kill the wild animals while someone else opined to burn the forest.The king felt neither of the suggestions or opinions to be justified. The matter was too serious.

Moreover he felt that the animals in forest are also a part of his kingdom. They are also his subjects. How can a demonstrative king be the cause of destruction of his subjects? The king announced that he himself will investigate the matter manifestly and will shortly find a solution of this problem. The conference ended after this.

On the other hand the animals in the forest gathered for a meeting. Lion, the king of the forest seemed very worried. Uncle tiger suggested that lion being the king of the animal kingdom should put forth their problems in a meeting with king Uday Bikram Pratap Dev. Everybody clapped. Uncle tiger, brother bear, uncle elephant, uncle python, sister dear agreed to accompany king lion. It was decided that next day morning they would start their journey.

Suddenly, the clever crow flew in saying 'kaw kaw'. He said, "Oh brothers and sisters, have you all gone mad? Why are you all going to meet the king? Now, the way humans have turned into our enemy they would kill us as soon as they get our sight with deadly weapons. Hence, it would not be wise that lion, tiger, elephant, dear, or python go to meet the king. Now this impenetrable part of the forest is the safest place for us". Dear asked, "Then would we extinct due to the continuous attack of human beings?"

"Oh, no, no... that is not the matter. Much before your meeting I have thought of a solution for this problem. The king of this kingdom is trying to find out a solution but has not found any solution," crow said.

Squirrel asked, "What is the way out then?" "Yes, there is a way, listen, after investigating I came to know that, our princess love animals very much. She has kept a talking parrot as a pet. Every morning and evening the princess spends time talking with the parrot on the roof of the palace. Let the golden oriole take this onerous responsibility. Cuckoo sister will teach her singing. Then she'll sing songs at the palace. Listening to her music the princess would like to keep her in the palace. Yellow bird would

surrender. Then finding appropriate time she will describe the plight of the animals in the forest to the parrot and the parrot will say everything to the princess. Princess will help the king finding a solution to our plights. Okay, then our problems will be over." The crow said this to everybody.

As per the plan all the animals and birds collectively started teaching music to the golden oriole. On the right time the golden oriole sang on the palace roof and submitted itself on the hands of the princess. Then finding opportunity described everything to the parrot.

The parrot passed the same to the princess. The princess immediately told this to the king. Listening to everything the king became happy. However in the meantime he had also investigated the matter and had came to know that human beings are cutting forests for their vested interest. As a result the animals residing there are not getting food and are venturing into the human habitat.

Besides deforestation, they are also killing innocent feral animals for their skin, horn, teeth etc. Hence the animals in order to protect themselves are atttacking human beings. Human beings are also bringing the river water under their control. So the thirsty wild animals come up to the nearby villages in search of water.

Knowing this the king called on a meeting. He announced that no subject can go for hunting in the forest. Cutting of trees in the forest cannot be done without his permission. No one should trouble the wild animals. Their natural habitat, food,water will not be destroyed. Whoever will disobey this order will be punished severely and the subjects who will work for the protection of flora and fauna will be rewarded.

Now, the subjects understood their fault. They realised that the animals also have equal rights to survive on this earth like us. Hence forth they loved the wild animals and protected them. Receiving love and protection from the human beings the annoyed wild animals changed completely. They never again attacked anyone nor did they devastated any human life or valuables.

Normalcy was restored in Pratapgarh after this. The flora and fauna increased in the kingdom receiving ample rainfall. The subjects resorted to agriculture, trade and commerce and lived happily.

15, Shanti Vihar
Baramunda, Bhubaneswar
(Odisha)-751003

मन की शांति

इरम कमाल

रीतू कुमारी

एक समय की बात है। एक साधु हिमालय की पहाड़ियों में रहकर मन की शांति प्राप्त करने के लिए घोर साधना कर रहा था।

दिन, हफ्ते, महीने, साल गुजरते रहे, लेकिन उसे मन की शांति नहीं मिल पा रही थी।

एक दिन की बात है। वह साधु पूजा-अर्चना के बाद अपनी कुटिया में आया और कंद-मूल खाकर सो गया। रात को उसके सपने में भगवान ने दर्शन दिए और कहा, "हे पुत्र, तुम इतने उदास क्यों रहते हो? इतनी पूजा-अर्चना के बाद तो तुम्हारा मन प्रसन्न होना चाहिए?"

साधु बोला, "पता नहीं क्या बात है, मुझे जो सच्ची खुशी चाहिए वो नहीं मिल पा रही है जिसकी तलाश में अपने परिवार को छोड़कर मैं यहाँ आया हूँ।"

भगवान मुस्कुराए और बोले, "तुम मनुष्य बड़े नादान होते हो। ये नहीं समझते कि पूजा-अर्चना से ही मन की शांति नहीं मिल जाती। मन की सच्ची खुशी, शांति को पाना चाहते हो तो अपने उन कर्तव्यों को पूरा करो जो तुम्हें सौंपे गए हैं।"

साधु बोला, "भगवन, मैं अब भी नहीं समझा।"

भगवान बोले, "जाओ अपने परिवार के पास और परिवार के प्रति जो तुम्हारे कर्तव्य हैं, उन्हें पूरा करो। तुम्हारे बिना तुम्हारा परिवार

परेशान है। एक तुम ही अकेले परिवार के मुखिया हो, कमाने वाले हो। तुम्हारे बच्चे खाने-पीने को तरस रहे हैं। तुम्हारे बूढ़े माता-पिता तुम्हारी राह देख-देखकर थक गए हैं। तुम अपने पीछे इतने लोगों को परेशान छोड़कर आए हो और फिर भी मन की शांति पाना चाहते हो?''

इतना कहकर भगवान खामोश हो गए।

साधु बोला, ''किंतु भगवान क्या पूजा, पाठ, साधना सब व्यर्थ है?''

भगवान बोले, ''नहीं, ऐसा मैंने कब कहा? पूजा-पाठ करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। परंतु जो कर्तव्य, जो दायित्व, जो जिम्मेदारी एक मनुष्य होने के नाते उसे सौंपी गई है उसको भूलकर, या उससे भागकर, या उससे मुँह चुराकर जो पूजा-पाठ या साधना की जाती है भगवान भी उससे खुश नहीं होते और न ही मनुष्य को मन की शांति मिलती है।''

इतना कहकर भगवान चले गए और साधु की आँख खुल गई।

उसे अपने दायित्वों का एहसास हो गया था और वह अपनी राह यानी अपने परिवार, अपने माता-पिता के पास जाने के लिए चल पड़ा। सच्ची मन की शांति पाने के लिए। जहाँ पूजा-अर्चना साधना तो थी ही, साथ ही था अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने का एहसास।

gmfs.sales@gmail.com

WELCOME TO NEW DELHI WORLD BOOK FAIR 2015

Are You

- A School/NGO/Publisher of Children's Pleasure Reading Books
- A Govt. Organization engaged in promotion of children's reading habit
- A Newspaper, Magazine or Social Media for children
- An Individual Expert in the field of Children's Literature

And do you want to

- Stage a skit/play on books and reading
- Hold a session/workshop/session on books and reading
- Organize a panel discussion and/or reading session
- Hold a seminar/discourse/talk on Children's Literature
- A Children's Authors' meet
- Any event aimed at promoting reading habit among children.....

We can provide you a forum in the ***Children's Pavilion***

New Delhi World Book Fair

Pragati Maidan, New Delhi

14-22 February 2015

Interested?

Then write to The Director, National Book Trust, India, Nehru Bhawan, 5 Institutional Area, Phase II, Vasant Kunj, New Delhi 110070 giving details about your organization/you and the proposed event (s) with date (s) by 30 Nov. 2014.

So, don't be late. Hurry up!

बोल बुद्धू

आज से लगभग 50 वर्ष पहले 'पराग' नाम की बाल पत्रिका में कार्टूनिस्ट आबिद सुरती के कार्टून छपते थे—पात्र होते थे बुद्धूराम। यह कॉमिक पात्र काफी हँसोड़ था। वह थके-हारे और उदासी से भरे बच्चों के होंठों पर मुस्कराहट ला देता। बच्चे धर्मकथा, नीतिकथा, बोधकथा जैसी बोझिल और शुष्क कथाओं को पढ़-पढ़कर पक जाते थे तो उन्हें हास्य-विनोद की खुराक भी तो चाहिए होती थी। बस, इसी भाव से जन्मा कॉमिक पात्र बुद्धूराम। यह पुस्तक उसी बुद्धूराम का संग्रहीत रूप है।

बोल बुद्धू
आबिद सुरती
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
₹55.00

बाल मन की सतरंगी कविताएँ
नवीन डिमरी 'बादल'
एस. कुमार एंड कंपनी, दिल्ली
₹250.00

बाल मन की सतरंगी कविताएँ

सरदी, गरमी, होली, दिवाली, तितली, राखी, चूहा, साँप, नववर्ष, पानी—कितने ही विषय होते हैं जिन पर एक संवेदनशील कवि के मन में कविता के भाव फूट पड़ते हैं। इस संग्रह में कवि नवीन 'बादल' के ऐसे ही विविध विषयों पर लिखी उनकी कविताएँ संग्रहीत हैं जिन्हें पढ़कर बच्चे गुनगुनाने लगेंगे। फिर उन्हें वे याद भी करना चाहेंगे। कुछ संदेश हैं और कुछ मनोरंजन भी ।

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date: 20/21 Same Month
Date of Publication: 14/11/2014

ENSURE YOUR PARTICIPATION IN THE LARGEST INTERNATIONAL BOOK FAIR OF THE AFRO-ASIAN REGION

NEW DELHI WORLD BOOK FAIR

14 - 22 February 2015
Pragati Maidan

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Organiser
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
Ministry of Human Resource Development
Government of India
Nehru Bhawan, 5 Institutional Area
Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110 070 (India)
Phone: 91-11-26707700 • Fax: 91-11-26707846
Website: www.nbtindia.gov.in

Co-organiser
इण्डिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइज़ेशन
INDIA TRADE PROMOTION ORGANISATION
Pragati Bhawan, Pragati Maidan, New Delhi-110 001
Website: www.indiatradefair.com

facebook.com/nationalbooktrustindia
facebook.com/newdelhiworldbookfair

- Guest of Honour Presentation
- CEOSpeak... a forum for publishing
- New Delhi Rights Table
- Authors' Corner
- Theme Pavilion & Children's Pavilion
- Cultural Programmes

Online booking for stalls / stands at
www.newdelhiworldbookfair.gov.in